अध्याय 12: अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

विषय-सूची

5 प्रश्नावली · 22 प्रश्न

प्रश्नावली 12.1	मौखिक — एक-दो पंक्तियों में उत्तर	4 प्रश्न
प्रश्नावली 12.2	लिखित (क) — 25-30 शब्दों में उत्तर	7 प्रश्न
प्रश्नावली 12.3	लिखित (ख) — 50-60 शब्दों में उत्तर	4 प्रश्न
प्रश्नावली 12.4	लिखित (ग) — आशय स्पष्ट कीजिए	4 प्रश्न
प्रश्नावली 12.5	भाषा-अध्ययन — कारक चिह्न पहचानिए	3 प्रश्न

प्रश्नावली 12.1 — मौखिक — एक-दो पंक्तियों में उत्तर

प्रश्न 1

बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे क्यों धकेल रहे थे?

हल

बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे धकेलकर उसकी जमीन हथियाना चाहते थे।
वे उस जमीन पर इमारतें और बस्तियाँ बनाने के लिए समुद्र को सिमटने पर मजबूर कर रहे थे।

उत्तर: बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र की जमीन हथियाकर वहाँ निर्माण कार्य करने के लिए उसे पीछे धकेल रहे थे।

प्रश्न 2

लेखक का घर किस शहर में था?

हल

लेखक (निदा फ़ाज़ली) का घर मुंबई (बंबई) के वर्सोवा में था।
पाठ में उल्लेख है कि उनका बचपन ग्वालियर में बीता, लेकिन वर्तमान घर वर्सोवा (मुंबई) में था।

उत्तर: लेखक का घर मुंबई (बंबई) के वर्सोवा में था।

प्रश्न 3

जीवन कैसे घरों में सिमटने लगा है?

हल

पाठ के अनुसार पहले लोग बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में मिल-जुलकर रहते थे।
अब बढ़ती आबादी और शहरीकरण के कारण जीवन छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में सिमटने लगा है।

उत्तर: जीवन छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में सिमटने लगा है।

प्रश्न 4

कबूतर परेशानी में इधर-उधर क्यों फड़फड़ा रहे थे?

हल

लेखक की माँ रोशनदान में घोंसले में रखे कबूतर के दो अंडों को बिल्ली से बचाने की कोशिश में स्टूल पर चढ़ी।
पहला अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया था; दूसरा अंडा माँ के हाथ से गिरकर टूट गया।
अपने दोनों अंडे टूट जाने से कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।

उत्तर: बिल्ली ने एक अंडा तोड़ दिया और दूसरा माँ के हाथ से गिरकर टूट गया, इसलिए कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।

प्रश्नावली 12.2 — लिखित (क) — 25-30 शब्दों में उत्तर

प्रश्न 1

अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं?

हल

लशकर एक पैगंबर का असली नाम था।
एक बार उनके सामने से एक घायल कुत्ता गुजरा तो उन्होंने उसे दुत्कारते हुए 'गंदे कुत्ते' कहा।
कुत्ते ने जवाब दिया कि न वह अपनी मर्जी से कुत्ता है, न लशकर अपनी पसंद से इनसान — बनाने वाला सबका एक ही है।
यह सुनकर लशकर बहुत दुखी हुए और सारी उम्र रोते रहे। इस रोने के कारण अरब ने उन्हें 'नूह' (रोने वाला) के नाम से याद किया।

उत्तर: लशकर पैगंबर ने एक घायल कुत्ते को दुत्कारा; कुत्ते के उत्तर से पछताकर वे सारी उम्र रोते रहे, इसलिए अरब ने उन्हें 'नूह' (रोने वाला) कहा।

प्रश्न 2

लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं और क्यों?

हल

लेखक की माँ सूरज ढलने के समय (सायंकाल) पेड़ों के पत्ते तोड़ने से मना करती थीं।
वे कहती थीं कि सूरज ढले आँगन के पेड़ों से पत्ते मत तोड़ो, पेड़ रोएँगे।
दीया-बत्ती के वक्त फूलों को तोड़ने से भी मना करती थीं, क्योंकि उनका मानना था कि फूल बद्दुआ देते हैं।
यह उनकी प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और सम्मान की भावना को दर्शाता है।

उत्तर: लेखक की माँ सूरज ढलने पर (दीया-बत्ती के वक्त) पेड़ों से पत्ते और फूल तोड़ने से मना करती थीं, क्योंकि उनका मानना था कि इससे पेड़ रोते हैं और फूल बद्दुआ देते हैं।

प्रश्न 3

प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ?

हल

मानव और प्रकृति के असंतुलन के कारण गर्मी में अधिक गर्मी पड़ने लगी।
बेवक्त की बरसातें, भूकंप (जलजले), बाढ़ (सैलाब), तूफान और नित नए रोग उत्पन्न होने लगे।
पर्यावरण प्रदूषण के कारण पक्षी बस्तियों से भागने लगे और वन्यजीव बेघर होने लगे।
मुंबई में समंदर के गुस्से ने तीन जहाज उठाकर तीन दिशाओं में फेंक दिए — यह प्रकृति के असंतुलन का ज्वलंत उदाहरण था।

उत्तर: प्रकृति में असंतुलन के कारण अत्यधिक गर्मी, बेवक्त बरसात, भूकंप, बाढ़, तूफान और नए-नए रोग उत्पन्न हुए तथा पक्षी बस्तियों से भागने लगे।

प्रश्न 4

लेखक की माँ ने पूरे दिन का रोजा क्यों रखा?

हल

ग्वालियर में लेखक के मकान के दालान के रोशनदान में कबूतर के जोड़े ने घोंसला बनाया था।
बिल्ली ने उचककर दो अंडों में से एक तोड़ दिया। माँ ने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की, लेकिन दूसरा अंडा उन्हीं के हाथ से गिरकर टूट गया।
कबूतरों की आँखों में दुख देखकर माँ की आँखों में भी आँसू आ गए।
इस 'गुनाह' को खुदा से माफ कराने के लिए उन्होंने पूरे दिन रोजा रखा, नमाज पढ़ी और दुआ माँगती रहीं।

उत्तर: माँ के हाथ से कबूतर का दूसरा अंडा टूट गया; इस गुनाह को खुदा से माफ कराने के लिए उन्होंने पूरे दिन रोजा रखा।

प्रश्न 5

लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

हल

ग्वालियर में लेखक के मकान के दालान में रोशनदान थे, कबूतरों के घोंसले थे, प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व था।
बंबई (वर्सोवा) में जहाँ आज लेखक का घर है, पहले दूर तक जंगल था — पेड़, परिंदे और जानवर थे।
अब वहाँ समंदर के किनारे लंबी-चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया।
कुछ जानवर शहर छोड़कर चले गए, कुछ ने यहाँ-वहाँ डेरा डाल लिया।
ग्वालियर से बंबई तक की दूरी ने संसार को काफी कुछ बदल दिया — प्रकृति और मानव के बीच संवेदनशीलता घटती गई।

उत्तर: ग्वालियर में कबूतरों के साथ सह-अस्तित्व था, प्रकृति-प्रेम था; बंबई में जंगल-पेड़-परिंदे गायब होकर बस्तियाँ बन गईं — प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता घटती गई।

प्रश्न 6

'डेरा डालने' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

हल

'डेरा डालना' का अर्थ है — किसी स्थान पर अस्थायी रूप से रुकना या पड़ाव डालना।
पाठ के संदर्भ में — बस्तियों के विस्तार से जो परिंदे-चरिंदे शहर नहीं छोड़ सके, उन्होंने यहाँ-वहाँ अस्थायी ठिकाना बना लिया।
जैसे लेखक के फ्लैट के मचान में दो कबूतरों ने घोंसला बना लिया — यह 'डेरा डालना' है।
इसमें उनके स्थायी घर का छिन जाना और अस्थायी आश्रय ढूँढना निहित है।

उत्तर: 'डेरा डालना' का अर्थ है अस्थायी पड़ाव बनाना। पाठ में जो परिंदे-चरिंदे शहर न छोड़ सके उन्होंने यहाँ-वहाँ अस्थायी ठिकाना बना लिया — यही 'डेरा डालना' है।

प्रश्न 7

शेख अयाज के पिता अपने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए?

हल

शेख अयाज के पिता कुएँ से नहाकर लौटे और भोजन करने बैठे।
जैसे ही उन्होंने रोटी का कौर तोड़ा, उनकी नजर बाजू पर पड़ी — वहाँ एक काला च्योंटा रेंग रहा था।
उन्हें अहसास हुआ कि वह च्योंटा कुएँ से उनके साथ उनके घर आ गया और इस तरह वे उसे उसके घर (कुएँ) से बेघर कर आए।
इसलिए उन्होंने भोजन छोड़ा और उस च्योंटे को उसके घर (कुएँ पर) छोड़ने चले गए।
यह उनकी जीव-दया और अन्य प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है।

उत्तर: शेख अयाज के पिता को लगा कि वे च्योंटे को उसके घर (कुएँ) से बेघर कर लाए; इसीलिए वे भोजन छोड़कर उसे वापस कुएँ पर छोड़ने गए।

प्रश्नावली 12.3 — लिखित (ख) — 50-60 शब्दों में उत्तर

प्रश्न 1

बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा?

हल

बढ़ती हुई आबादी ने प्रकृति पर गहरा और विनाशकारी प्रभाव डाला।
समंदर को पीछे सरकाया जाने लगा — बिल्डर उसकी जमीन हथियाने लगे।
पेड़ों को रास्तों से हटाया जाने लगा, जिससे वन्यजीवों के आवास नष्ट हुए।
फैलते प्रदूषण ने पक्षियों को बस्तियों से भगाना शुरू किया।
बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताया।
इन सबके परिणामस्वरूप गर्मी में अत्यधिक गर्मी, बेवक्त बरसात, भूकंप, बाढ़, तूफान और नए-नए रोग उत्पन्न हुए।

उत्तर: बढ़ती आबादी के कारण समंदर सिमटा, पेड़ कटे, प्रदूषण फैला और पक्षी बेघर हुए। इससे अत्यधिक गर्मी, बेवक्त बरसात, भूकंप, बाढ़, तूफान और नए-नए रोग उत्पन्न हुए। प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया।

प्रश्न 2

लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली क्यों लगवानी पड़ी?

हल

लेखक के फ्लैट के एक मचान में दो कबूतरों ने घोंसला बना लिया था।
उनके बच्चे छोटे थे और बड़े कबूतर बच्चों को खिलाने-पिलाने के लिए दिन में कई बार आते-जाते थे।
कबूतरों के आने-जाने से घर में परेशानी होती थी — वे कभी कोई चीज गिराकर तोड़ देते, कभी लाइब्रेरी में घुसकर किताबों को सताते।
इस रोज-रोज की परेशानी से तंग आकर लेखक की पत्नी ने उस जगह जाली लगवा दी जहाँ कबूतरों का आशियाना था, और खिड़की को भी बंद किया जाने लगा।

उत्तर: कबूतर लेखक के मचान में रहते थे और बार-बार आने-जाने से चीजें तोड़ते और लाइब्रेरी में घुसकर परेशान करते थे। इस रोज-रोज की परेशानी से तंग आकर पत्नी ने जाली लगवा दी।

प्रश्न 3

समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला?

हल

कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेलकर उसकी जमीन हथियाते रहे।
पहले समंदर ने अपनी फैली टाँगें समेटीं, फिर सिमटकर बैठ गया, फिर उकड़ूँ बैठा, फिर खड़ा हो गया।
जब खड़े रहने की भी जगह कम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया।
उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते तीन जहाजों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया।

एक वर्ली के किनारे गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह और तीसरा गेट-वे-ऑफ-इंडिया पर टूट-फूटकर गिरा। वे फिर चलने-फिरने के काबिल नहीं हो सके।

उत्तर: बिल्डरों द्वारा लगातार जमीन छीने जाने से तंग समंदर ने गुस्से में एक रात तीन जहाजों को उठाकर तीन दिशाओं में फेंक दिया — एक वर्ली, दूसरा बांद्रा और तीसरा गेट-वे-ऑफ-इंडिया पर आ गिरा।

प्रश्न 4

'मट्टी से मट्टी मिले, खो के सभी निशान, किसमें कितना कौन है, कैसे हो पहचान' इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

हल

ये पंक्तियाँ नूह के प्रसंग में उस कुत्ते के उत्तर के संदर्भ में आई हैं।

कुत्ते ने कहा था — 'न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।'

इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि अंत में सभी प्राणी — मानव, पशु, पक्षी — मिट्टी में मिल जाते हैं।

जब सब मिट्टी से बने हैं और मिट्टी में मिल जाएँगे, तो सभी के निशान खो जाते हैं।

फिर यह कैसे पहचाना जाए कि किसमें कितना कौन है — कौन श्रेष्ठ है, कौन हीन?

इसलिए जाति, धर्म, प्रजाति के आधार पर किसी से भेदभाव करना उचित नहीं।

उत्तर: इन पंक्तियों से लेखक कहता है कि सभी प्राणी एक ही मिट्टी से बने हैं और अंत में मिट्टी में मिल जाते हैं। जब सबके निशान मिट जाते हैं तो ऊँच-नीच का भेद निरर्थक है — इसलिए किसी से घृणा या दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए।

प्रश्नावली 12.4 — लिखित (ग) — आशय स्पष्ट कीजिए

प्रश्न 1

नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई में देखने को मिला था।

हल

इस पंक्ति का आशय यह है कि प्रकृति असीमित नहीं है — उसकी सहनशक्ति की भी एक सीमा होती है।
मनुष्य लगातार प्रकृति का दोहन करता रहा — समंदर की जमीन छीनी, पेड़ काटे, प्रदूषण फैलाया।
बंबई में जब बिल्डरों ने लगातार समंदर को सिकोड़ा तो समंदर ने अपना गुस्सा एक रात तीन जहाजों को उठाकर फेंककर निकाला।
यह प्रकृति की चेतावनी थी कि यदि मनुष्य ने प्रकृति का उपयोग अत्यधिक किया तो वह पलटकर विनाश करेगी।

उत्तर: प्रकृति की सहनशक्ति की सीमा होती है। बंबई में बिल्डरों ने समंदर को लगातार सिकोड़ा, तो समंदर के गुस्से ने तीन जहाज उठाकर फेंक दिए — यह मानव के अत्याचार के विरुद्ध प्रकृति की प्रतिक्रिया का उदाहरण है।

प्रश्न 2

जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है।

हल

इस पंक्ति का आशय है कि महान और शक्तिशाली व्यक्ति या शक्ति सहनशील और धैर्यवान होती है।
लेखक ने यह बात समंदर के संदर्भ में कही है — समंदर विशाल है, इसलिए वह लंबे समय तक सहता रहा।
पहले उसने अपनी टाँगें समेटीं, फिर सिमटकर बैठ गया, उकड़ूँ बैठा, खड़ा हो गया — इतना सहने के बाद ही उसे गुस्सा आया।
लेकिन जब गुस्सा आया तो उसे रोकना मुश्किल हो गया और उसने तीन जहाज उठाकर फेंक दिए।
यह एक जीवन-सत्य है — महान लोग अधिक सहते हैं, पर जब उनका धैर्य टूटता है तो परिणाम बहुत भयंकर होता है।

उत्तर: महान और शक्तिशाली शक्ति अधिक सहनशील होती है — जैसे विशाल समंदर लंबे समय तक सहता रहा। पर जब उसका धैर्य टूटा तो उसने तीन जहाज उठाकर फेंक दिए। बड़ों का गुस्सा देर से आता है पर आए तो अत्यंत विनाशकारी होता है।

प्रश्न 3

इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा डाल लिया है।

हल

इन पंक्तियों का आशय है कि मानव की बढ़ती बस्तियों ने वन्यजीवों का आवास नष्ट कर दिया।
जहाँ पहले जंगल, पेड़ और परिंदे थे वहाँ बस्तियाँ बन गईं।
जो पक्षी और जानवर शहर से बाहर जा सके, वे चले गए।
जो नहीं जा सके, उन्होंने मानव के घरों, छतों, मचानों और खिड़कियों में अस्थायी आश्रय ले लिया।
लेखक के फ्लैट के मचान में कबूतरों का घोंसला इसी का प्रतीक है।
यह पंक्तियाँ मानवीय विस्तार से प्रकृति और जीव-जंतुओं पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को उजागर करती हैं।

उत्तर: मानव की बस्तियों ने वन्यजीवों के घर छीन लिए। जो शहर छोड़ सके वे चले गए, जो न जा सके उन्होंने मानव के घरों में डेरा डाला — जैसे लेखक के मचान में कबूतरों का घोंसला। यह मनुष्य द्वारा प्रकृति के अतिक्रमण का परिणाम है।

प्रश्न 4

शेख अयाज के पिता बोले, 'नहीं, यह बात नहीं है। मैंने एक घरवाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुएँ पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में छिपी हुई उनकी भावना को स्पष्ट कीजिए।

हल

शेख अयाज के पिता ने कुएँ से नहाते समय अनजाने में एक च्योंटे को उसके घर से बेघर कर दिया था।
जब उन्हें यह एहसास हुआ तो वे भोजन बीच में छोड़कर उठ खड़े हुए।
इन शब्दों में उनकी जीव-दया, अपराध-बोध और नैतिक जिम्मेदारी की भावना छिपी है।
उन्होंने एक साधारण च्योंटे को भी 'घरवाला' कहा — अर्थात उसका भी उतना ही अधिकार है अपने घर पर जितना मनुष्य का।
यह भावना पाठ की मूल थीम — दूसरे के दुख में दुखी होना — को साकार करती है।
यह पंक्तियाँ यह संदेश देती हैं कि सच्ची मानवता छोटे से छोटे प्राणी के दुख की भी परवाह करती है।

उत्तर: इन पंक्तियों में शेख अयाज के पिता की गहरी जीव-दया और अपराध-बोध है। उन्होंने च्योंटे को 'घरवाला' कहकर उसके अधिकार को स्वीकार किया और भोजन छोड़कर उसे उसके घर पहुँचाने गए — यही सच्ची मानवता और दूसरे के दुख में दुखी होने की भावना है।

प्रश्नावली 12.5 — भाषा-अध्ययन — कारक चिह्न पहचानिए

प्रश्न 1

उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों में कारक चिह्नों को पहचानकर रेखांकित कीजिए और उनके नाम रिक्त स्थानों में लिखिए— जैसे: (क) माँ ने भोजन परोसा। — कर्ता (ख) मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ। (ग) मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया। (घ) कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। (ङ) दरिया पर जाओ तो उसे सलाम किया करो।

हल

(क) माँ ने — 'ने' = कर्ता कारक (कर्ता)
(ख) किसी के लिए — 'के लिए' = संप्रदान कारक
(ग) मैंने — 'ने' = कर्ता कारक; 'को' (घर वाले को) = कर्म कारक
(घ) परेशानी में — 'में' = अधिकरण कारक
(ङ) दरिया पर — 'पर' = अधिकरण कारक; 'उसे' = कर्म कारक

उत्तर: (ख) के लिए — संप्रदान कारक। (ग) ने — कर्ता कारक; को — कर्म कारक। (घ) में — अधिकरण कारक। (ङ) पर — अधिकरण कारक।

प्रश्न 2

नीचे दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए— चींटी, घोड़ा, आवाज, बिल, फ़ौज, रोटी, बिंदु, दीवार, टुकड़ा।

हल

चींटी → चींटियाँ
घोड़ा → घोड़े
आवाज → आवाजें
बिल → बिल (बहुवचन रूप एकसमान)
फ़ौज → फ़ौजें
रोटी → रोटियाँ
बिंदु → बिंदु (बहुवचन रूप एकसमान) / बिंदुएँ
दीवार → दीवारें
टुकड़ा → टुकड़े

उत्तर: चींटी→चींटियाँ, घोड़ा→घोड़े, आवाज→आवाजें, बिल→बिल, फ़ौज→फ़ौजें, रोटी→रोटियाँ, बिंदु→बिंदु, दीवार→दीवारें, टुकड़ा→टुकड़े।

प्रश्न 3

ध्यान दीजिए नुक्ता लगाने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। नीचे दिए वाक्यों में उचित शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिए— (क) आजकल _____ बहुत खराब है। (ज़माना/जमाना) (ख) पूरे कमरे को _____ दो। (सजा/सज़ा)

(ग) _____ चीनी तो देना। (ज़रा/जरा) (घ) माँ दही _____ भूल गई। (जमाना/ज़माना) (ङ) दोषी को _____ दी गई। (सजा/सज़ा) (च) महात्मा के चेहरे पर _____ था। (तेज/तेज़)

हल

(क) आजकल ज़माना बहुत खराब है। — 'ज़माना' (नुक्तायुक्त) = समय/काल
(ख) पूरे कमरे को सजा दो। — 'सजा' (बिना नुक्ते) = सजाना/सज्जित करना
(ग) ज़रा चीनी तो देना। — 'ज़रा' (नुक्तायुक्त) = थोड़ा
(घ) माँ दही जमाना भूल गई। — 'जमाना' (बिना नुक्ते) = जमाने की क्रिया
(ङ) दोषी को सज़ा दी गई। — 'सज़ा' (नुक्तायुक्त) = दंड
(च) महात्मा के चेहरे पर तेज था। — 'तेज' (बिना नुक्ते) = प्रभाव/कांति

उत्तर: (क) ज़माना (ख) सजा (ग) ज़रा (घ) जमाना (ङ) सज़ा (च) तेज।